BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

किसान आंदोलन और सीवान (महापंडित राहुल सांकृत्यायन की भूमिका)

अमित राज
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग, बि.बि.म.को. विश्वविद्यालय, धनबाद
पंजीयन संख्या – BBMKU-PHD0205

किसान आंदोलन और सीवान :

स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में अखिल भारतीय किसान सभा का जन्म 1936 में लखनऊ कांग्रेस में हुआ।[1] किसान–मजदूर राज्य की स्थापना की कल्पना लेकर लखनऊ कांग्रेस से पूर्व भी विभिन्न प्रदेशों में आंदोलन प्रारंभ हो चुका था। यह आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन के पूरक के रूप में विकसित हो रहा था। अंग्रेजी साम्राज्य के अंत के साथ–साथ जमींदारी प्रथा एवं जमींदारो के पाशविक जुल्मो का अंत करना किसानो का आम नारा बन गया था। इस प्रकार के आंदोलन विशेष रूप से बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि जमींदारी प्रथा वाले राज्यो में विकसित हो रहा था। विभिन्न प्रदेशो में विकसित होने वाले किसान आंदोलनों को एक सूत्र में बांधकर संचालित करने के उद्देश्य से लखनऊ कांग्रेस के अवसर पर अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना की गयी। किसान सभ की नींव डालने वालो में स्वामी सहजानंद सरस्वती, इंदुलाल याज्ञिक, प्रो. एन.जी. रंगा, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, बंकिम मुखर्जी, पं. कार्यानंद शर्मा, पं. यदुनाथ शर्मा, आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण, पी.सी.जोशी, किशोरी प्रसन्न सिंह, मोहन लाल गौतम, जेड.ए.अहमद आदि के नाम उल्लेखनीय है।[2]

2 जनवरी 1939 को राहुल सांकृत्यायन ने नागार्जुन के साथ सारण जिले के किसान–कार्यकर्ताओं की बैठक में भाग लिया और पहली बार सीवान में अमवारी के किसानो से उनकी दुःखद स्थिति की जानकारी मिली। किसानो ने बताया – ''हमारे खेत छीन लिए गए हैं, हमने इधर–उधर बहुत दौड–धूप की। कांग्रेस नेताओं के पास भी गए, पर कोई नहीं सुनता।[3]

इसके पूर्व राहुल सांकृत्यायन सीवान क्षेत्र का दौरा कर स्थिति से अवगत हो चुके थे। महेंद्र शास्त्री से छपरा में उन्हे यह जानकारी दी कि बाबू नारायण प्रसाद सिंह ने गोरियाकोठी में अपने परिवार के कई घरों के खेतो को मिलाकर पंचायती खेती शुरू की है। इस तरह की खेती में विज्ञान के कितने ही आविष्कारों का इस्तेमाल हो सकता है, राहुल जी 27 अक्टूबर, 1938 को छपरा से गोरियाकोठी के लिए रवाना हुए। रास्ते में जामो बाजार में डॉ. सियावर शरण के यहां रूके। वहां से गोरियाकोठी गए। नारायण बाबू ने पंचायती खेती का प्रयोग दिखाया। उन्होने इस पंचायती खेती में 4 परिवार के 29 व्यक्तियों को

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

शामिल कर 97 बीघे जमीन पर इसका प्रयोग किया था। 10 माह पूर्व प्रारंभ किए गए इसकी योजना से प्रत्यक्ष लाभ दिख रहा था। राहुल सांकृत्यायन ने ''पंचायती खेती का एक प्रयास'' नाम से एक विस्तृत

लेख लिखा। राहुल जी 2 नवंबर, 1939 तक महाराजगंज, अतरसन, एकमा, बरेजा, मांझी आदि गांवो में घूमें तथा वहां के किसानो की दशा का अध्ययन किया।[4]

छपरा में राहुल जी 2 जनवरी 1939 को किसानोसे अमवारी की स्थिति सुन चुके थे। वे वस्तु–स्थिति के अध्ययन के लिए 5 जनवरी 1939 को सीवान में ट्रेन से उतरकर अमवारी[5] पहुंचे।[6]

अमवारी में बकाश्त आंदोलन :

राहुल सांकृत्यायन ने अमवारी जाकर किसानो की स्थिति का अध्ययन किया और ''अमवारी के पीडित किसान'' शीर्षक से 'जनता' पत्र में एक लेख लिखा। उसमें किसानो की बदहाली की चर्चा करते हुए राहुल जी ने लिखा – ''इन मनुष्य की संतानो को देखकर मुझे लगता है कि क्यों इन्हे धर्म और भगवान के नाम से चुप रहकर सब कुछ सहने की बात सिखलायी गयी। आज अगर किसी दूसरे मुल्क में ऐसी अवस्था होती तो, वहां के भुखमरों की पलटन महलों में आग लगा देती। यह असह्य है। मनुष्य का इतना पतन हो सकता है, यह ख्याल में भी नहीं लाया जा सकता है। पांच साल से होने वाली बाढ के सताए इस अमवारी गांव को 'बाबू चंदेश्वर सिंह' जैसे जमींदार मिले। वे बिना वेतन खुफिया पुलिस का काम करते आए हैं। पुलिस और हाकिमो के ऊपर उनका काफी असर है और यह बात अमवारी गांव में हाल में जो किसानों के खिलाफ दफा 144 हुआ है, इससे स्पष्ट हो जाता है। राहुल जी ने आगे लिखा है कि जब से कांग्रेसी सरकार बिहार में कायम हुई है, जमींदारों में खलबली मच गयी है। उन्हे मालूम हो गया कि बकाश्त में जोतने वालो का हक हो जाएगा। चंदेश्वर सिंह, होशियार आदमी इस बात को अच्छी तरह जानते थे और इसलिए वे अपनी काश्त को किसानो के हाथ से निकालने की तदवीर में थे। इसी बीच में कांग्रेसी सरकार के प्रचार के कारण लोगो ने हरी–बेगारी आदि का अन्याय का भी कुछ हल्का सा विरोध करना शुरू कर दिया। अमवारी गांव में हरेक किसान बैल पीछे अपने मालिक को कार्तिक में तीन हल और आषाढ में तीन हल कुल छह हल मुफ्त बेगार में देता आ रहा था। इसके अतिरिक्त महीनो दूध लेकर मालिक दूध का दाम देने की जरूरत नहीं समझते थे। रैयत के घर की लौकी, कद्दू और दूसरी तरकारी मालिक की अपनी चीज थी। तेली लोगो से पक्का दो मन खली और चिराग जलाने के लिए कोल्हू पीछे पांच सेर तेल मुफ्त लिया जाता था।''[7]

जमींदारों के सांप्रतिक आक्रोश की चर्चा करते हुए राहुल जी ने लिखा –

''पिछले आषाढ में हमेशा की तरह मालिक लोगो ने हरी लाने के लिए जोर दिया। तीन–तीन साल तक भदई और धान की फसल की बर्बादी के कारण लोग दरिद्रता के कारण अधीर हो गए थे। उन्होने हरी

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

देने से इंकार नहीं किया, हालांकि कांग्रेस की आज्ञानुसार ऐसा करना चाहिए था। किसानो ने मालिको द्वारा हरी की मांग करने पर प्रार्थना की – ''कुछ खेत जोत लेने दीजिए, फिर हरी लीजिए।'' रामधनी महतो कार्तिक में एक दिन हल चला रहे थे, तो बाबू चंदेश्वर सिंह के छोटे भाई भोला सिंह ने आकर रामधनी महतो से हरी (हल की बेगार) मांगी। तो रामधनी ने कहा, 'यही खेत से आगे का हमलोग का खाना जुटेगा, बो लेने दीजिए, फिर आपका हरी कर देंगें।' तब बाबू भोला सिंह ने गालियां दी और कुछ देर के बाद बाबू गुफ्तार सिंह स्थानीय स्कूल के हेडमास्टर बाबू मृगराज सिंह के साथ आए। मृगराज सिंह के हाथ में लाठी थी और वे भी गालियां बक रहे थे। बाबू गुफ्तार सिंह ने रामधनी महतो को तीन लाठी मारी। अभी और भी मार होती, इसी बीच गांव के लोग चले आए और गांव के लोगो के रूख को बेरूख देखकर बाबू भोला सिंह और गुफ्तार सिंह वहां से हट गए।[8]

अमवारी के किसान निश्चय कर चुके थे कि हम अपने खेत नहीं छोडेंगे, इसके लिए चाहे जो कुछ भी हो। चाहे दफा 144 लगे या उनपर दफा 110 लगाकर बदमाशी का मुकदमा चलाया जाए। किसान जिस नरक की जिंदगी बिताते है, उनके लिए जेल में रहना स्वर्ग मालूम होगा।''[9]

जयजोरी में किसान संघर्ष :

6 जनवरी 1939 को राहुल जी जयजोरी[10] गए। वहां के किसानो पर जमांदार का वर्षो तक जुल्म होता रहा था। खेत में एक अच्छत पैदा न हो, लेकिन मालगुजारी, जुर्माना सब मालिक के पास पहुंचना चाहिए। किसान कितने दिनो तक मालगुजारी कर्ज लेकर देते। जब देने में असमर्थ रहे तो जमींदार ने खेत नीलाम करवा दिया। पर जीवन–मरण का प्रश्न होने के कारण उन्होने जमीन न छोडने का निर्णय किया। वर्षो तक लडते रहने के कारण जमींदार इनका कुछ नहीं बिगाड सके।[11]

7 जनवरी 1939 को राहुल जी आंदर के निकट सुल्तानपुर गांव भी गए। वहां डॉ. महमूद की जमींदारी थी जो कांग्रेस के प्रमुख नेता और कांग्रेसी सरकार में मंत्री भी थे। राहुल जी के पूछने पर एक मुसलमान किसान ने कहा – ''सारे रैयत परेशान–परेशान हैं। एक किस्त भी मालगुजारी बाकी रह जाए तो मार कर खाल उडेल देते हैं। हरी–बेगारी, जुर्माना के मारे नाक में दम है। मालिक की 75 बीघे की बकाश्त है और उसका जोतना–बोना हमलोगो को अपने हल–बैल से करना पडता है।[12]

सीवान के एस.डी.ओ. से राहुल सांकृत्यायन द्वारा किसानों की स्थिति का बयान :

8 जनवरी 1939 को राहुल जी ने सीवान एस.डी.ओ. के पास जाकर अमवारी के किसानो की तकलीफें बतायी। राहुल जी ने लिखा, – एस.डी.ओ. ने कहा – ''मैं अभी–अभी नया आया हूं, मैं खुद वहां जाकर जांच करूंगा।'' लेकिन वह कभी जांच करने नहीं गया। जांच की जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि गांव वालों का जमींदार चंदेश्वर बाबू से झगडा था, वह सरकार के खैरख्वाह थे, कई सालों से अवैतनिक सी.आई.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

डी. का काम कर रहे थे, सरकार ने उन्हें उपाधि भी दी थी। उनके पास कई बडे अंग्रेज हाकिमों के प्रशंसा–पत्र थे। उनकी एक–एक बात अंग्रेज मजिस्ट्रेट के लिए ब्रह्म–वाक्य थे।[13]

छितौली में बकाश्त आंदोलन :

31 जनवरी 1939 को राहुल जी किसानो की स्थिति का अध्ययन करने छितौली[14] गए। इसके पूर्व गोरियाकोठी में चार दिनो तक ठहरे। वहां पंचायती खेती देखी और वहीं पर छितौली के किसानों ने अपनी तकलीफ बतायी। वे छितौली के जमींदार अशर्फी साहू से मिले। राहुल जी ने लिखा है – ''असर्फी साहू ने कहा कि मैंने किसी असामी को खेत नहीं दिया है, मैं अपना खेत आप जोतता हूं। वे सरासर झूठ बोल रहे थे। 489 बीघा खेत के लिए वहां उनके पास हल–बैल कहां थे ? जब असर्फी साहू ने निहले साहब से जमीन खरीदी और कोठी खरीदी, उस वक्त तक कितने ही आसामी खेत जोता करते थे। उनसे साहू ने खेत निकलवा लिया था।[15]

12 फरवरी 1939 को पुनः राहुल जी छितौली गए। अशर्फी साहू किसानो को उजाडने के लिए तैयार था। 6,000 किसान सभा में आए थे – हिंदू–मुसलमान सब। वहां सत्याग्रह आश्रम कायम हुआ और सत्याग्रह का निर्णय लिया गया। राहुल जी वहां दो दिनो तक रहे। 60 से अधिक परिवारो ने सत्याग्रहियों में अपना नाम लिखवाया। साहू ने मामला बिगडते देखा। उन्होने अपने आदमियो को भेजकर कहलवाया – आधा खेत रैयतो को दिलवा दे और आधा उनके पास रहने दे। तीन व्यक्तियों की कमिटी बनी – एक व्यक्ति जमींदार का, दूसरा किसानो का और तीसरा दोनो द्वारा मिलकर चुना हुआ व्यक्ति। पर बाद में अशर्फी साह कमिटि का फैसला मानने को तैयार न थे।

राहुल जी का अमवारी सत्याग्रह :

24 फरवरी 1939 को राहुल जी ने अमवारी में सत्याग्रह का कार्यक्रम रखा, साथ में बाबा नागार्जुन[16] और जलील[17] भी थे। आंदर गांव में भी 23 फरवरी 1939 को सभा की जा चुकी थी, जिसके सभापति महान् देशभक्त मौलाना मजहरूल हक के पुत्र हुसैन मजहर[18] थे। 24 फरवरी को जमीदार की ओर से भी काफी तैयारी थी। गांव के पास दो हाथी खडे थे और उसके पीछे सैकडो लट्ठधारी आदमी भी। इधर लालजी भगत के बथान में सैकडों किसान जमा हो गए थे। 10–10 आदमी और 1–1 नायक की पांच टोलियां बारी–बारी से एक किसान के खेत में ऊख काटने का निश्चय किया। 10 बजे राहुल जी के नेतृत्व में 11 व्यक्ति हंसुआ लेकर खेत पर पहुंच गए। उन्होने दो ऊख काटी। इसपर थानेदार ने उन्हें और अन्य दस जनों को गिरफ्तार कर लिया। उसी समय एकाएक हाथीवान कुर्बान ने राहुल जी की खोपडी पर लाठी से वार किया। सिर से खून बहने लगा। वहां से वे डिप्टी मजिस्ट्रेट के कैंप लाए गए। थानेदार ने कुर्बान को भी गिरफ्तार कर लिया था, किंतु जमींदार के कहने पर इंस्पेक्टर ने उसे छोड दिया। उस दिन 52

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

व्यक्ति गिरफ्तार हुए, परंतु 28 को छोड दिया गया। शाम में 15 व्यक्तियों को मोटर में भरकर सीवान के लिए रवाना किया गया।[19] राहुल जी के सिर पर प्रहार की प्रतिक्रिया पूरे देश में, यहां तक की विदेशों में भी हो रही थी। राहुल जी के आहत होने के संबंध में प्रोफेसर मनोरंजन प्रसाद ने बडे दर्द के साथ 'राहुल का खून पुकार रहा है' शीर्षक कविता लिखी।

यह कविता ''राहुल का अपराध (अमवारी सत्याग्रह) नामक पुस्तक में छपी है। –

राहुल के सर से खून गिरे, फिर क्यों वो खून उबल ना पडे ?
साधु के शोणित से फिर क्यों, सोने की लंका जल ना उठे ?
धक–धक धक धक धक धधक–धधक, उठ जगरि महाक्रांति वाले,
हैं निकल पडे अन्यायी के, चम चम चम चम बर्छी भाले।
उठ कृषकों के अभिमान जाग, उठ दलितो के बलिदान जाग।
उठ महाक्रांति के प्राण जाग, उठ रे मजदूर–किसान जाग।
अब दिन लद गए सलामी के, अवसर न रहे भू–स्वामी के।
वे भी मनुष्य, हम भी मनुष्य, हम कायल नहीं गुलामी के।
हो चुकी बहुत कुछ मनमानी, हमने भी कुछ करने की ठानी,
हम पीछे पग न हटाएंगें, दानायी हो या नादानीः
हम अपने स्वत्व न छोडेंगें, पीछे न कभी मुख मोडेंगें,
हम अन्यायी कानूनों के अन्यायी बंधन तोडेंगे,
जो फसल खेत में छायी है, मेरी बस यही कमायी हैः
आलसी–निकम्मों सावधान, श्रमिकों की बारी आयी हैः
फिर कौन है जो हमें डांटेगा, जो बोयेगा वो काटेगा ?
जो सोयेगा वो खोयेगा, वो बूंद ओस की चाटेगा,
राहुल का खून पुकार रहा, बढने को हमें पुकार रहाः
वह विश्व विदित विद्वान आज, हंसिया लेकर ललकार रहा,
होवें अन्यायी सावधान, वे कुटिल कसायी सावधान !
लो जेलों की दीवारों से प्रतिध्वनि आयी सावधान ![20]

माधेपुर, बरौली (सारण जिला), देवघर सबडिविजन के रतनपुर, रोहिणी, सरांवा, चंपारण के बगहा, मुजफ्फपुर जिला के पातेपुर, शेरपुर, महमदपुर इत्यादि स्थानों में राहुल–प्रहार–दिवस पर सभा का

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

आयोजन कर विरोध प्रकट किया गया।[21] गया में 10 अप्रैल 1939 को आयोजित अखिल भारतीय किसान सभा'' के चतुर्थ अधिवेषन में अमवारी सत्याग्रह में राहुल जी पर प्रहार की तीव्र आलोचना की गयी। खुले अधिवेषन में यह प्रस्ताव आया –

''अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातत्वज्ञ, विद्वान और पर्यटक एवं अपने उज्ज्वल शांत चरित्र के लिए कांग्रेस और दूसरे क्षेत्रों में प्रसिद्धि प्राप्त महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे व्यक्ति को, उस समय पीटा गया, जब वे पुलिस के कब्जे में थे, तब जमींदार के आदमी कैसे उन्हें पीट पाएं ? उनका खून कैसे बहा पाए ? इस सभा का दर्द और बढ जाता है जब राहुल जी स्पष्ट आरोप लगाते है कि उन्हें जो मार पडी, वह पुलिस इंस्पेक्टर की शह पर पडी। और इसपर भी बिहार के मंत्रिमंडल ने कुछ नहीं किया।'' .... आगे इस सभा की नाराजगी नफरत में बदल जाती है, जब वह यह देखती है कि इस महापुरूष को जेल में साधारण कैदियों की तरह रखा गया और उन्हें दागी कैदियों खाना दिया गया और जेल में उनके साथ दागी कैदियो जैसा ही बर्ताव किया गया, जिसके चलते उन्हें अनशन के ब्रह्मास्त्र के प्रयोग पर बाध्य होना पडा।''[22]

चार दिनो के अंदर कांग्रेस सरकार ने किसान आंदोलन के बंदियों को सारी सुविधाएं देने का आश्वासन दिया।[23]

7–8 मार्च 1939 त्रिपुरी में कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर अखिल भारतीय किसान कमिटि की बैठक स्वामी सहजानंद सरस्वती की अध्यक्षता में हुई, जिसमें राहुल सांकृत्यायन पर अमवारी में हुए हमले की भर्त्सना की गयी।[24]

17 अप्रैल 1939 को मि. ब्राइसन, आई.सी.एस., एस.डी.ओ., सीवान ने दफा 143 (गैरकानूनी मजमें का मेम्बर होने) और दफा 379 (ऊख की चोरी करने) में छह–छह माह की कडी सजा दी, एवं साथ में 20 रूपया जुर्माना भी लगाया। जुर्माना न चुकाने की स्थिति में तीन माह की अतिरिक्त कैद का आदेश पारित किया।[25] परंतु ''जनता'' पत्र के अनुसार चोरी की दफा में छह माह की सख्त कैद, 30 रूपया जुर्माना और न दे सकने पर तीन माह की अति सख्त कडी कैद।[26]

राहुल जी ने अपनी उचित मांगो को मनवाने का कोई रास्ता न देखकर उपवास का रास्ता अपनाया। वे 01.05.1939 से 10.05.1939 तक जेल में अनशन पर रहे। अंततः बिहार सरकार ने उनकी कारामुक्ति का आदेश पारित किया। उन्होने 242 घंटों के बाद उपवास तोडा।[27]

राहुल जी कारामुक्त होकर 17 मई 1939 को सीवान में आयोजित किसान सभा में सम्मिलित हुए। उस सभा में यदुनंदन शर्मा का ओजस्वी भाषण हुआ। वहां से राहुल जी जामो बाजार आए और अगले नौ

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

दिनो तक डॉ. सियावर शरण के घर रहे। 25 मई को अमवारी में 8–10 हजार की जनता की बडी सभा हुई, जिसमें राहुल जी का भी भाषण हुआ। फिर 26 मई 1939 को राहुल जी मैरवा गए।[28]

अमलोरी में किसान सभा :

15 अगस्त 1939 को अमलोरी (सीवान) में किसानो की एक सभा हुई। राहुल जी ने लिखा है वहां की सभा में 8,000 किसान इकट्ठा हुए। विद्या सिंह के अत्याचारों के विरूद्ध प्रस्ताव किया गया। सभा में गडबडी डालने के लिए एक निर्लज्ज औरत को भेजा गया था, किंतु वह अकेले क्या कर सकती थी ? सभा बहुत अच्छी तरह हुई। सभा खत्म होने पर लोग स्टेशन की ओर जा रहे थे। गांव के सामने से जरा सा आगे निकलते ही एक ढेला राहुल जी के बगल में गिरा। पता चला कि ढेला विद्या सिंह के साला ने मारा था। वह पकडा गया और एकाध थप्पड लगाकर छोड दिया गया।

इसके अतिरिक्त बसंतपुर थाने के बाला गांव, भोपतपुर, जोगापुर कोटी तथा सीवान में भी किसान आंदोलन किया गया। सीवान के किसान आंदोलन में राहुल जी एवं उनके साथियों के द्वारा सक्रिय सहयोग दिया गया। डॉ. बांके बिहारी मिश्र तथा स्वतंत्रता सेनानी जगन्नाथ लाल ने भी सक्रिय भूमिका निभायी। 29 अगस्त 1939 को राहुल जी ने कुर्बान पर दायर मुकदमा को उठा लेने का दरखास्त दिया।[29]

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

संदर्भ

1. पशुपति सिंह, 'स्वामी सहजानंद और किसान' स्वामी सहजानंद सरस्वती स्मृति ग्रंथ, प्रथम भाग, सं. शर्मा सुधाकर, प्रकाशक – स्वामी सहजानंद विचार मंच, पटना, 1982 पृ. 144
2. रामावतार शास्त्री, 'जननायक स्वामी सहजानंद सरस्वती' एक संस्मरण, स्वामी सहजानंद सरस्वती स्मृति ग्रंथ, भाग – 1, पृ. 14–15
3. राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीनव यात्रा, भाग–2, किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 500
4. –वही– पृ. 495–496
5. अमवारी रघुनाथपुर प्रखंड अंतर्गत एक गांव है जो सीवान से करीब 25 कि.मी. पर अवस्थित है।
6. राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीवन यात्रा, भाग–2, पृ. 500
7. राहुल सांकृत्यायन, 'अमवारी के पीडित किसान', जनता साप्तिाहिक, संपादक–रामवृक्ष बेनीपुरी, 19 जनवरी, 1939, पृ. 11–12
8. –वही– पृ. 12
9. –वही– पृ. 20
10. जय जोरी सीवान के आंदर थाने के अंतर्गत एक गांव है
11. राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–2, किताब महल, इलाहाबाद, 1950, पृ. 500
12. –वही– पृ. 501
13. –वही– पृ. 501
14. छितौली सीवान में गोरियाकोठी के अंतर्गत एक गांव है
15. राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–2, पृ. 502
16. नागार्जुन–सुप्रसिद्ध वामपंथी साहित्यकार
17. जलील–सीवान जिले के चौकीहसन ग्राम के स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व विधायक
18. हुसैन मजहर–मौलाना मजहरूल हक के पुत्र जो साम्यवाद से जुडे थे।
19. राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–2, किताब महल, इलाहाबाद, 1950, पृ. 511–512

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

20. विष्णुदेव, 'राहुल जी : क्या हमारी समस्याओं का समाधान आज कर रहे हैं ?' गपशप–प्रवेशांक, अक्टूबर, 1979, सं. गिरिजरनंदन प्रसाद, विष्णुदेव एवं अशोक कुमार 'सुमन', पृ. 39–40
21. 'जनता', साप्तिाहिक दिनांक 13 अप्रैल 1939, संपादक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ. 2
22. –वही– पृ. 8
23. एम.ए. रसूल, हिस्ट्री ऑफ द इंडिया किसान सभा, नेशनल बुक एजेंसी (प्राई) लि., कलकत्ता, 1974, पृ. 50–51
24. –वही– पृ. 45–47
25. जनता साप्ताहिक, दिनांक–20 अप्रैल, 1939, पृ. 2
26. –वही– पृ. 5
27. राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–2, पृ. 523
28. –वही– पृ. 525
29. राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–2, पृ. 530